



DR. RAMAN GANGAKHEDKAR

Dr. Raman Gangakhedkar is Head of the Division of Epidemiology and Communicable Diseases, the Indian Council of Medical Research, New Delhi.

2. Born on 6th June, 1958, Dr. Gangakhedkar studied at the Government Medical College, Aurangabad and became a paediatrician in 1983. He completed Master of Public Health at the world renowned Johns Hopkins School of Public Health, Baltimore, USA in 1996. His research and management of Nipah & Zika virus outbreaks and HIV disease have been exemplary. His efforts have put India at the top in response against emerging infections globally. Nipah virus is a high risk pathogen that can be used as an agent for bio-terrorism. It occurred for the first time in Kerala in 2018. There was a fear that it will spread rapidly in India. He managed to get Nipah virus isolated and established that it was similar to the Bangladesh strain, associated with higher mortality rate (89%). Isolation of similar Nipah virus strain from patients and fruit bats suggested that it has established itself in Kerala. There is no treatment or vaccine available Nipah. He led the development of a clinical trial protocol using a monoclonal antibody in coordination with WHO, Geneva and NIH, USA to test in India, Bangladesh, Malaysia and Singapore.

3. Dr. Gangakhedkar successfully negotiated production of GMP grade monoclonal with an Indian vaccine manufacturer and provide it free to any country that faces this infection for trial purposes. A 'point of care' test and an ELISA test were developed against Nipah. The molecular 'point of care' test is being validated as the first Make in India diagnostic test which has not been approved anywhere in the world. The experience of handling 2018 outbreak helped in controlling the 2019 outbreak in Ernakulam with due support from Kerala government. With the belief that infections do not recognise international borders and that effective elimination of any organism must ensure that neighbours are also as safe, Dr. Gangakhedkar established an India-led regional research platform of ten countries in South East Asia supported by WHO.

4. When Zika virus was detected in Jaipur, Dr. Gangakhedkar rapidly pressed in another comprehensive research response. The virus was isolated for the first time in India from patients and mosquitoes. Recognising the public health importance of Zika and difficulties in controlling infections spread by mosquitoes, he initiated many studies on it including a trial of an indigenous vaccine to prevent Zika infection. His almost four decades services in the field of public health begin with his early years spent in the National Institute of Nutrition and at the National Institute of Immunohaematology, Mumbai. With a sense of commitment to the impoverished, he continued to work in the government setup and chose the field of HIV/AIDS in 1989 when fear of acquisition of HIV infection while extending care prevailed high.

5. Dr. Gangakhedkar has contributed immensely to bringing expertise to HIV Medicine in India and sound comprehensive public health policies and strategies that helped in reducing the incidence of HIV infection in India. His pioneering research work especially that on HIV in married monogamous women was utilised by UNAIDS in South East Asia in advocacy for women-centric prevention approaches and reduction of stigma. His research on sexually transmitted diseases helped the National program immensely. He was the key player in developing the program on Prevention of Parent to Child Transmission of HIV infection in India. His study to assess the effectiveness of counseling to reduce risky behaviour was quoted in the best practice document of UNAIDS. He played a crucial role in bringing dignity to the socially challenged population groups vulnerable to HIV infection through empowerment and successfully advocated for their involvement in policymaking. He has treated over tens of thousands HIV infected individuals. He has ably provided leadership through the National AIDS Research Institute, Pune.

6. Dr. Gangakhedkar has published over 180 scientific articles in various national and international journals. His book entitled "On the horizon of adulthood", translated in Hindi & Marathi is considered as a piece of icebreaking literature aimed at eliminating the communication barrier intrinsic to HIV infection and sexuality. He has received several awards and fellowships including Fogarty & FXB fellowships. He has been on the advisory & expert committees of several prestigious national and international bodies focused on tackling HIV disease. As a prolific speaker, he has been a faculty for training and educating all strata of the society, from health care workers to truck drivers. He has been awarded many scientific orations. His exceptional scientific contributions to the National AIDS Control Program were recognised and he was felicitated by Honourable Health Minister while launching Test & Treat policy in India in 2017.





डॉ. रमण गंगाखेडकर

डॉ. रमन गंगाखेडकर, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के महामारी विज्ञान और संचारी रोग विभाग के प्रमुख हैं।

2. 6 जून, 1958 को जन्मे डॉ. गंगाखेडकर ने औरंगाबाद के सरकारी मेडिकल कॉलेज से अपनी पढ़ाई की और 1983 में शिशु रोग विशेषज्ञ बने। उन्होंने 1996 में विश्व विख्यात जॉन हॉपकिन्स स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ, बाल्टी–मोर, अमेरिका से जन स्वास्थ्य में मास्टर की डिग्री हासिल की। निपाह और जीका वायरस महामारी और एचआईवी रोग पर उनका शोध और प्रबंधन अनुकरणीय रहा है। उनके प्रयासों ने दुनिया भर में उभरते संक्रमण से लड़ाई में भारत को सर्वोच्च स्थान पर पहुंचा दिया है। निपाह वायरस एक खतरनाक रोगाणु है, जिसे जैव आतंकवाद फैलाने के लिए प्रयोग किया सकता है। सबसे पहले यह 2018 में केरल में पाया गया। इसके भारत में तेजी से फैलने का डर था। वह निपाह वायरस को पृथक करने में कामयाब रहे और उन्होंने साबित किया कि यह बांग्लादेश स्ट्रेन से मिलता–जुलता है, जिसमें उच्च मृत्यु दर (89.1) पाई जाती है। मरीजों और चमगादड़ों से निपाह वायरस स्ट्रेन को पृथक करने से यह पता चला कि इसने केरल में अपने पैर जमा लिए हैं। निपाह का कोई इलाज या टीका नहीं है। उन्होंने डब्ल्यूएचओ, जेनेवा और एनआईएच, अमेरिका के साथ मिलकर भारत, बांग्लादेश, मलेशिया और सिंगापुर में टेस्ट करने के लिए एक मोनोक्लोनल एंटीबॉडी का प्रयोग करते हुए एक क्लीनिकल ट्रायल प्रोटोकॉल तैयार किया।

3. डॉ. गंगाखेडकर एक भारतीय टीका निर्माता के साथ जीएमपी ग्रेड मोनोक्लोनल के निर्माण और इसे ट्रायल के मकसद से इस वायरस से पीड़ित किसी देश को मुफ्त में देने की व्यवस्था करने में कामयाब रहे। निपाह के लिए एक प्वाइंट ऑफ केयर टेस्ट और एलिसा टेस्ट विकसित किए गए। मॉलेक्यूलर प्वाइंट ऑफ केयर टेस्ट को पहले मेक इन इंडिया डायग्नोस्टिक टेस्ट के रूप में मान्यता दी जा रही है, जिसे दुनिया में अभी कहीं और मंजूरी नहीं दी गई है। 2018 के प्रकोप से निपटने का अनुभव केरल सरकार के सहयोग से एर्नाकुलम में 2019 के प्रकोप को काबू में करने में काम आया। इस विश्वास के साथ कि संक्रमण, देशों की सीमाओं को नहीं पहचानता और किसी जीवाणु के कारगर उन्मूलन में पड़ोसियों की सुरक्षा को भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए, डॉ. गंगाखेडकर ने डब्ल्यूएचओ के सहयोग से दक्षिण–पूर्वी एशिया में भारत की अगुआई में दस देशों के एक क्षेत्रीय अनुसंधान प्लेटफॉर्म की स्थापना की।

4. जब जयपुर में जीका वायरस का पता चला, डॉ. गंगाखेडकर ने उससे लड़ने के लिए तेजी से एक और व्यापक शोध की शुरुआत की। भारत में पहली बार इस वायरस को मरीजों और मच्छरों से पृथक किया गया। जीका से जनस्वास्थ्य को बचाने और मच्छरों से फैलने वाले संक्रमणों को काबू करने में आने वाली मुश्किलों को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने इस पर कई सारे अध्ययनों की शुरुआत की। इसमें जीका संक्रमण को रोकने के लिए एक देशी टीके का ट्रायल भी शामिल था। जनस्वास्थ्य के क्षेत्र में उनका करीब चार दशकों का सफर राष्ट्रीय पोषण संस्थान और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इम्युनोहेमेटोलॉजी में उनके शुरुआती वर्षों से आरंभ हुआ। गरीबों के प्रति समर्पण की भावना के साथ वह सरकारी व्यवस्था में काम करते रहे और उन्होंने 1989 में उस वक्त एचआईवी/एड्स का फील्ड चुना, जब इलाज करने के दौरान एचआईवी से संक्रमित होने का डर सबसे अधिक रहता था।

5. डॉ. गंगाखेडकर ने भारत में एचआईवी की दवा में विशेषज्ञता हासिल करने और मजबूत व्यापक जनस्वास्थ्य नीतियां और योजनाएं बनाने में बहुमूल्य योगदान दिया है, जिनसे भारत में एचआईवी संक्रमण की घटनाओं पर लगाम लगाने में मदद मिली। विवाहित और एकपतित्व महिलाओं में एचआईवी पर उनके महत्वपूर्ण शोध कार्य को, यूएनएड्स द्वारा दक्षिण पूर्वी एशिया में महिलाओं पर केंद्रित रोकथाम के तरीकों और सामाजिक अपमान को कम करने के लिए इस्तेमाल किया गया। यौन संचारित रोगों (एसटीडी) पर उनके शोध ने राष्ट्रीय कार्यक्रम में बहुत मदद की। भारत में माता–पिता से बच्चे में आने वाले एचआईवी संक्रमण की रोकथाम पर कार्यक्रम बनाने में उनकी प्रमुख भूमिका थी। जोखिम भरे व्यवहार में कमी लाने में काउंसलिंग की कारगरता का आकलन करने के उनके अध्ययन को यूएनएड्स के बेस्ट प्रैक्टिस डॉक्यूमेंट में जगह मिली। उन्होंने सशक्तीकरण के द्वारा एचआईवी संक्रमण के प्रति असुरक्षित सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों को सम्मान दिलाने में एक अहम भूमिका निभाई और नीति–निर्माण में उन्हें शामिल करने की हिमायत की। उन्होंने लाखों एचआईवी संक्रमित लोगों का इलाज किया है। उन्होंने राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान, पुणे का कुशल नेतृत्व किया है।

6. अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में डॉ. गंगाखेडकर के 180 से ज्यादा वैज्ञानिक लेख प्रकाशित हो चुके हैं। हिंदी और मराठी में अनुदित उनकी पुस्तक 'ऑन द होराइजन ऑफ एडल्डहुड' को एक मौलिक पुस्तक माना जाता है, जिसका उद्देश्य एचआईवी संक्रमण और सेक्सुअलिटी के संबंध में सप्रेषण बाधाओं को दूर करना है। उन्हें कई पुरस्कार और फेलोशिप से सम्मानित किया गया है जिनमें फोगार्टी और एफएक्सबी फेलोशिप शामिल हैं। वह एचआईवी रोग से निपटने से संबंधित कई प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की सलाहकार और विशेषज्ञ समिति में रहे हैं। एक प्रखर वक्ता के रूप में, वह स्वास्थ्यकर्मियों से लेकर ट्रक ड्राइवरों तक, समाज के हर वर्ग को प्रशिक्षित और शिक्षित करने का काम कर चुके हैं। उन्हें कई वैज्ञानिक व्याख्यान देने के लिए सम्मानित किया जा चुका है। राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम में उनके असाधारण वैज्ञानिक योगदान के सम्मानस्वरूप, 2017 में, उन्हें माननीय स्वास्थ्य मंत्री द्वारा भारत में टेस्ट एंड ट्रीट पॉलिसी की शुरुआत के दौरान सम्मानित किया गया।